BIHAR

Ranjan Kumar
Government Middle School Bihat
Barauni, Begusarai, Bihar
Email id: rtibeg@gmail.com, govtmsbihat@gmail.com

Abstract

The transformations in this school took place through the undaunting spirit of the school head. Determined to transform his school, the school head motivated teachers, worked towards increasing attendance of students, revived forums of parent teacher meetings, strengthened principal-teacher and teacher-student bonds. He convinced state *Bal Bhawan* to open a centre *'Kilkari'* in the school. This centre helped students to learn different activities related to art-craft, sports etc. In 2017, the school was selected as the *Best Bal Kendra* in Bihar. This centre helped students to make their presence felt at the national level. The school was also selected as the Best School in Barauni block by the education department. Another initiative was starting the Dikshant Samroh to felicitate students who completed class 8 successfully.

उम्मीदों की राह.....

कर्त्तव्य पर योगदान ... राजकीयकृत मध्य विद्यालय, बीहट, (बरौनी, बेगूसराय, बिहार) में प्रधानाध्यापक पद पर 16 मई 2016 से .....

प्राप्त विरासत

शिक्षार्थी .वर्ग तीन से अष्टम तक नामांकित 688 बच्चों के विरूद्ध महज 150-200 बच्चों की औसत उपस्थिति जो पोशाक व छात्रवृति जैसे योजनाओं के लाभार्थी बनने की जद्दोजहदमें बोझिल मन से तथा अपने अभिभावकों द्वारा ठेल-ठाल कर स्कूल भेजे जाने के कारण केवल औपचारिकता

निभाने हेतु ही उपस्थित होते थे और जिन्हें विद्यालय में संचालित अधिगम प्रक्रिया को लेकर ना कोई जुड़ाव था व ना ही वो इसकी जरुरत महसूस करते थे |

शिक्षक : आंकड़ों व रपट के सरकारी आदेशों की औपचारिकतानिभाने की खानापूर्ति में लगे तथा पंजियों के साथ माथा -पच्ची में उलझे व पन्नों पर कॉलमों के लिए लाइनें खींचने की अंतहीन प्रक्रिया को निपटाने में शिक्षक, जिनके पास बच्चों से जुड़ने की ना तो इच्छा शेष थी और ना ही वक्त था |

भवन परिसर व संसाधन :उदास और बेजान विद्यालय भवन व परिसर तथा यत्र-तत्र बिखड़े पड़े नगण्य संसाधन और चतुर्दिक अस्त-व्यस्त स्थिति, मानोसारी चुनौतियाँ एक साथ मुँह बाए खड़ी थी |

बदलाव की कवायद

1 बच्चों व अभिभावकों को विद्यालय से जोड़ने व विकेन्द्रित नेतृत्व में साझेदार बनाने की तैयारी :नैराश्य और बोझिल उदासी से खीझकर उधम मचाने को प्रवृत रहने वाले बच्चों से जुड़ाव व उन्हें अधिगम प्रक्रिया से जोड़ने हेतु शिक्षकों को अभिप्रेरित करने की प्रक्रिया पक्के घड़े पर मिट्टी चढाने के मानिन्द लग रहे थे | समाज का विद्यालय की व्यवस्था पर कोई विश्वास नहीं कोई जुड़ाव नहीं | बस आशा की आखिरी किरण केवल वो बच्चे थे, जो नियमित विद्यालय आ रहे थे, हर सुबह नई उम्मीदों के स्वप्न संजोए | मुझे लगा कि नए रंग भरने की कोशिशें यही से शुरू की जा सकती है | मेरी ये धारणा कि "आप शिक्षा के लिए उपयुक्त वातावरण का निर्माण करें बाकी काम वातावरण खुद कर लेगा" को आजमाने का वक्त लगा कि अब आ गया है | बालकेन्द्रित अभिरुचि में समाहित स्वस्थ प्रतिस्पर्धा माहौल तथा विकेन्द्रित नेतृत्व को मूर्त रूप देने हेतु चार हाउस (शान्तिनिकेतन, तक्षशिला, मिथिला एवं विक्रमशिला) में सभी बच्चों के समूह विभाजन के साथ बच्चों का विद्यालयी परिवेश से जोड़ने व विकेन्द्रित नेतृत्व में साझेदार बनाने की प्रक्रिया मूर्त होने लगी | अभिभावक और बच्चों के बीच निरंतर संवाद से वातावरण में बदलाव की आहट आने लगी |

2 बच्चों के साथ स्नेहपूर्ण व्यवहार: विद्यालय परिसर में प्रवेश पर बच्चों को अपनत्व भरे लाड़-प्यार देकर स्वागत करने की अभिनव परंपरा शुरू की गयी | इसका बच्चों के ऊपर जादू सा असर दिखा, इस हेतु हमें पहले विद्यालय पहुँचना होता है और छुट्टी के बाद सभी बच्चों को स्नेहपूर्ण विदायी देकर ही विद्यालय से प्रस्थान करते हैं, ये सिलसिला विगत 2016 से अब तक अनवरत जारी है द्य

3 बालकेन्द्रित आकर्षणयुक्त सुसज्जित व प्रभावशाली चेतना सत्र की शुरुआत : विद्यालय की प्रातः कालीन सभा जो अब तक महज एक औपचारिक प्रक्रिया मात्र थी को आकर्षक और बालकेन्द्रित बनाने के साथ-साथ बच्चों के मन में विद्यालय और अधिगम से जोड़ने, विद्यालय के प्रति श्रद्धा और विश्वास पैदा कराने वाले सशक्त माध्यम के रूप में विकसित करने का लक्ष्य बनाकर कार्य शुरू किया|आकर्षण से भरे हुए सुसज्जित चेतना-सत्र में रोचक बालकेन्द्रित आयामों के जोड़े जाने तथा नियमित रूप से किये जाने वाले अभिप्रेरक संबोधनों से बच्चों में विश्वास व जुड़ाव का सुप्त बोध जागृत होने लगा |प्रार्थना और संविधान प्रस्तावना की औपचारिकताओं से आगे 'आज का विचार' 'ज्ञान-चर्चा' 'अभियान गीत', बच्चों के जन्मदिन को सेलिब्रेट करना अच्छे कार्यों व उपलब्धियों पर चर्चा के साथ उन्हें सम्मानित करने जैसी नियमित परंपराओं की नीव रखने से चेतना सत्र का आकर्षण काफी बढ़ गया |

4 आकादमिक बदलाव ससमय विद्यालय संचालन की अवधि तथा कक्षा शिक्षण तालिका का दृढ़ता स अनुपालन एवं समय से मासिक परिक्षाओं के केलेन्डर को सख्ती के साथ लागू किये जाने से विद्यालय व्यवस्था के प्रति बच्चों एवं अभिभावकों का भरोसा बढ़ने लगा |

5 शैक्षिक सह शैक्षिक क्रिया कलापों व गतिविधियों का समावेशन प्रत्येक शनिवार को नियमित रूप से विशिष्ट आयोजनों की श्रृंखलाबद्ध शुरुआत जिसमें विशिष्ट व्यक्तियों (शिक्षा, साहित्य, कला, संस्कृति, खेल, समाज सेवा, प्रशासन, राजनीति आदि में विशेष योगदान देनेवाले, विशेष उपलब्धियाँ हासिल करने वाले शख्सियतों से मुलाकात व सीधे संवाद कायम करने का अवसर बच्चों को देते हुए उन्हें अपनी अभिरुचि का

मॉडल स्वयं निर्धारित करने की प्रेरणा देते रहने की कोशिशों के साथ-साथ कविता वाचन, कथावाचन, विज्ञान गोष्ठी सहित कई विषय आधारित कार्यशालाओं के आयोजन को समाहित किया गया |राष्ट्रीय महत्त्व के दिवसों पर विशिष्ट आयोजन, उत्सवी माहौल और विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा बच्चों को उपलब्धियों के लिए पुरुस्कृत करने से बच्चों में आत्मसम्मान और आत्मविश्वास का बोध भरना सहज होने लगा |

6 संध्याकालीन सभा छुट्टी के वक्त एक बार फिर असेम्बली लगाने की व्यवस्था को साकार किया गया |इसमें सभी हाउस के बच्चों की उपस्थिति की गुणना कर विद्यालय में पूरे दिन सर्वाधिक संख्या में उपस्थिति देने वाले हाउस का ध्वज लहरा कर उसे सम्मानित किये जाने की नयी परंपरा शुरू की गयी | संध्यकालीन सभा में विद्यालय की शिक्षक श्रीमति अनुपमा सिंह के द्वारा नवाचारी गतिविधि के रूप में "क्वीज़ बाबू" को शुरू किया जिसमें प्रतिदिन सामान्य ज्ञान के दो प्रश्न पूछने और उत्तर देने वालों को पुरस्कृत करने की परंपरा स्थापित की गई |

7 विद्यालय में राष्ट्रीय बाल.भवन निर्देशित तथा किलकारी: बिहार बाल भवन द्वारा संपोषित बाल केंद्र की स्थापना करते हुए, बच्चों को उनकी सृजनशीलता के उन्मुखीकरण के साथ अपनी प्रस्तुतियाँ देने के वृहत फलक को मूर्त रूप दिया गया |इसमें जहाँ एक ओर बच्चों ने अपने प्रशिक्षकों के साथ जी-तोड़ मेहनत कर विद्यालय को राज्य स्तर और राष्ट्रीय स्तर पर एक नई पहचान के साथ स्थापित किया, वहीं दूसरी और कई विशिष्ट उपलब्धियों के लिए सम्मान व प्रमाण पत्र भी प्राप्त किये |जिसमें वर्ष 2017 के लिए पूरे बिहार का "सर्वश्रेष्ट बाल-केन्द्र सम्मान" तथा वर्ष 2018-19 के लिए शिक्षा विभाग द्वारा बरौनी प्रखंड का "सर्वश्रेष्ट विद्यालय सम्मान" प्रमुख है |

8 दीक्षांत समारोह: प्रारंभिक शिक्षा पूर्ण करने वाले बच्चों को विशिष्ट व्यक्ति के हाथों प्रारंभिक शिक्षा का प्रमाण-पत्र ससम्मान देने हेतु दीक्षांत समारोह आयोजित करने की परंपरा आरंभ की गई |

9 अद्तयन जानकारियाँ विद्यालय परिसर को आकर्षक और सुन्दर बनाने हेतु मुख्य शिक्षण कक्षों को आकर्षक एवं उत्तम गुणवत्ता के रंगों से सुसज्जित किया गया साथ ही आधुनिक शिक्षण शैली का लाभ बच्चों व शिक्षकों को देने हेतु अपने वेतन से ऋण लेकर मल्टीमीडिया वर्ग कक्ष की स्थापना जिसमें 65 इंच का इंटरनेट कनेक्टीविटी से लैस स्मार्ट टेलीविजन के द्वारा बच्चे और शिक्षक विषय वस्तु तथा गतिविधियों से अद्धतन जानकारियाँ हासिल करते हैं |

10 परिणामतः तमाम विपरीत परिस्थितियों के बीच न्यून संसाधनों में स्नेहपूर्ण व्यवहार, बेहतर समन्वय के साथ बच्चों की सक्रिय सहभागिता और अभिभावकों के बीच बढ़ते भरोसे के दम पर आज विद्यालय में न केवल छात्र-छात्राओं का नामांकन बढ़ा है, बल्कि उनकी उपस्थिति के प्रतिशत के साथ अधिगम का स्तर भी आश्चर्यजनक रूप से सुधरा है| शैक्षणिक सत्र 2018-19 में 753 छात्र-छात्राएँ नामांकित है और औसत उपस्थिति तक़रीबन 550 से 575 के बीच है |

बच्चे और अभिभावक गर्व से आज कहते हैं हमारा विद्यालय हमारी प्रतिष्ठा